आदर्श प्रश्न- पत्र - 4

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'अ'

कक्षा - दसवीं

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड है -
   खंड क- 20 अंक
   खंड ख- 15 अंक
   खंड ग - 35 अंक
   खंड घ - 20 अंक
2. चारो खंडो के प्रश्नो के उत्तर देना अनिवार्य है।

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तर के विकल्प छाँटकर लिखिए -**

मनुष्य अनुकरणशीलप्राणी है | अतः आस-पास के लोगों एवं सहचरों से कर्म सीखता है | किसी मनुष्य की प्रकृति क्या है, उसके स्वाभाविक गुण क्या है, उसका नैतिक, अध्यात्मिक और समाजिक चरित्र कैसा है, किस विषय में उसकी अभिरुचि है, इन सभी बातों का ज्ञान हमें उसकी संगति से होता है | किसी महापुरुष का कथन है कि यदि किसी को मित्र एवं सुहृदय बनाना हो तो उसके सहचरों को देखना चाहिए | अंतः उसके संगी कौन हैं, मित्र कौन-कौन हैं, इससे ही उसका परिचय मिलता है | सुसंगति एक ऐसी पारस मणि है जो लोहे को भी सोना बनाने की क्षमता रखती है | चन्दन के समीप रहने से आस-पास के वृक्ष भी सुगंधित हो जाते हैं | दूध के साथ पानी भी उसी मूल्य बिकता है | जल की बूँदें यदि गर्म तवे पर पड़े तो वह तत्क्षण मिट जाएगी | यदि संयोग से यही बूँद सीप के मुख में गिरे तो वह उज्जवल मणि बनेगी | यही सत्संग की महत्ता है |

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनिए |

(क) मनुष्य अपना अधिकतर कर्म कहाँ सीखता है?

(i) समाज में

(ii) मंदिर में

(iii) छवि गृह में

(iv) विदेश में

(ख) सुसंगति पारस मणि के सामान है क्योंकि:

(i) सुसंगति अच्छा शब्द है

(ii) सुसंगति से बुरा भी अच्छा हो जाता है

(iii) सुसंगति से अच्छा धनार्जन होता है

(iv) उपर्युक्त सभी

(ग) मनुष्य कैसा प्राणी है?

(i) शिथिल

(ii) सुसुप्त

(iii) अनुकरणशील

(iv) मूढ़

(घ) महापुरुष किस समास का उदाहरण है?

(i) तत्पुरुष

(ii) द्विगु

(iii) द्वंद्व

(iv) कर्मधारय

(ङ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक निम्नलिखित में से क्या होगा?

(i) सुसंगति के गुण

(ii) सुसंगति

(iii) सुसंगति का फल

(iv) सुसंगति का महत्त्व

2. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर खिए-**

भारतीय नारी सर्वगुण संपन्न है | वह उत्सर्ग, त्याग, दया, क्षमा, ममता, और सौदर्य की प्रतीक है | नारी के ये गुण जितने भी विकसित हों, उसका महत्त्व और आकर्षण उतना ही बढ़ता है | भारतीय नारी व्यष्टि में समष्टि को देखती है | इसलिए आदर्श नारियाँ ध्रुव नक्षत्र के समान प्रकाशमान हैं | नारी का ही दूसरा नाम श्रद्धा है | आदर्श नारी के मन की क्षमता इतनी विशाल है जिसे भगवान वामन का पैर भी नहीं माप सकता | राष्ट्र-निर्माण में नारी का बड़ा महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व है | त्याग, तपस्या, साधन, तथा अहिंसा की प्रतिमूर्ति भारतीय नारी एक ऐसी शक्ति है जिसके आधार पर भारतीय समाज में नूतन जागरण की नवल बेला लाई जा सकती है | हमारा वर्तमान समाज दासता के दूषित प्रभाव से केवल मैला ही नहीं हो उठा है, बल्कि इसकी भव्य दीवारें, चमकती हुई मीनारें तथा भारतीय कलाकारों के सुन्दर हाथों से संजोई हुई तस्वीरें टूट-फुटकर धराशायी हो चुकी है | माँ के रूप में विधाता की सर्वश्रेष्ठ कृति नारी ही भारतीय अतीत के खंडहर में प्राणों का संचार कर उसे जीवित बना सकती है |

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनिए |

(क) एक भारतीय नारी का गुण है:

(i) क्षमा, दया

(ii) त्याग, ममता

(iii) श्रद्धा, साधना

(iv) उपर्युक्त सभी

(ख) नारी विधाता की सर्वश्रेष्ठ कृति है क्योंकि:

(i) भगवान ने उसे स्वयं बनाया है

(ii) अतीत के खंडहर में प्राणों का संचार करती है

(iii) समाज को शिक्षा देती है

(iv) उपर्युक्त सभी

(ग) नारी परिवार की जान होती है क्योंकि:

(i) वह परिवार का संचालन करती है

(ii) वह परिवार को एक सूत्र में बाँधे रखती है

(iii) परिवार में जान फूँकती है

(iv) उपर्युक्त सभी

(घ) उपर्युक्त गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(i) भारतीय नारी

(ii) राष्ट्र निर्माण में नारी का महत्त्व

(iii) अहिंसा की प्रतिमूर्ति-नारी

(iv) उपर्युक्त सभी

(ङ) 'नवल बेला' का शाब्दिक अर्थ है?

(i) नया समय

(ii) नया युग

(iii) नया काल

(iv) उपर्युक्त सभी

3. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तरों में से सही विकल्प छांटकर लिखिए।**

ओ नए साल, कर कुछ कमाल, जाने वाले को जाने दे,
दिल से अभिनंदन करते हैं, कुछ नै उमंगे आने दे |
आने जाने से क्या डरना, ये मौसम आते जाते हैं,
तन झुलसे शिखर दुपहरी में कभी बादल भी छा जाते हैं |
इक वह मौसम भी आता है, जब पत्ते भी गिर जाते हैं,
हर मौसम को मनमीत बना, नवनीत ख़ुशी के गाने दे |
जो भूल हुई उसे, अब आगे भूल सुधार तो कर,

बदले में प्यार मिला भी, पहले औरों से प्यार तो कर,
फूटेंगे प्यार के अंकुर भी, वह जमीं जरा तैयार तो कर,
भले जीत का जश्न मना, पर हार को भी स्वीकार तो कर,
मत नफरत के शोले भड़का बस गीत प्यार के गाने दे |

इस दुनिया में लाखों आए और आकर चले गए,
कुछ मालिक बनकर बैठ गए, कुछ माल पचाकर चले गए,
कुछ किलों अंदर बंद रहे, कुछ किले बनाकर चले गए,
लेकिन कुछ ऐसे भी आए, जो शीश चढ़ाकर चले गए,
उन वीरों के पद-चिन्हों पर, अब 'साथी' सुमन चढ़ाते दे |

उपर्युक्त काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनें |

(क) कवि नए साल से क्या कामना कर रहे हैं?

(i) स्वस्थ बने रहने की
(ii) नई उमंगों के आगमन की
(iii) सुख व समृद्धि की
(iv) लंबी आयु की

(ख) मौसम के आने-जाने से क्या अभिप्राय है?

(i) कर्मशः ऋतुओं का आवागमन
(ii) अतिथियों का आवागमन
(iii) पशु-पक्षियों का आवागमन
(iv) सुखों व दुखों का आवागमन

(ग) "भले जीत का जश्न मना ...." पंक्ति में कवि क्या प्रेरणा दे रहा है?

(i) सफलता-असफलता को समान भाव से स्वीकारने की
(ii) सफलता में स्वयं को भूल जाने की
(iii) असफलता में हताश हो जाने की
(iv) परिस्थितियों के अनुसार कर्म करने की

(घ) 'जो शीश चढ़ाकर चले गए' - पंक्ति किनकी ओर संकेत कर रही है?

(i) ईश्वर भक्तों की ओर
(ii) शहीदों की ओर
(iii) देशवासियों की ओर
(iv) तपस्वियों की ओर

(ङ) दुनिया में कैसे-कैसे लोग आए और चले गए?

(i) मालिक बनने वाले
(ii) किले में रहने वाले

(iii) किले बनाने वाले

(iv) उपर्युक्त सभी

4. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तरों में से सही विकल्प छांटकर लिखिए।**

चौड़ी सड़क गली पतली थी
दिन का समय घनी बदली थी
रामदास उस दिन उदास था
अंत समय आ गया पास था
उसे बता यह दिया था उसकी हत्या होगी |
धीरे-धीरे चला अकेले
सोचा साथ किसी को ले ले
फिर रह गया, सड़क पर सब थे
सभी मौन थे सभी निहत्थे
सभी जानते थे यह उस दिन उसकी हत्या होगी

खड़ा हुआ वह बीच सड़क पर
दोनों हाथ पेट पर रख कर
सधे कदम रख करके आए
लोग सिमट कर आँख गड़ाए
लगे देखने उसको जिसकी तय था हत्या होगी |
निकल गली से तब हत्यारा
आया उसने नाम पुकारा
हाथ तौलकर चाकू मारा
छूटा लोहू का फव्वारा
कहा नहीं था उसने आखिर उसकी हत्या होगी?

उपर्युक्त काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनें |

(क) रामदास उदास था?

(i) क्योंकि वह जानता था कि उसकी हत्या होगी

(ii) क्योंकि वह अकेला था

(iii) क्योंकि वह गरीब था

(iv) उपर्युक्त सभी

(ख) रामदास किसी को अपने साथ लेते-लेते क्यों रुक गया?

(i) क्योंकि उसे अपनी हत्या की जानकारी नहीं थी

(ii) क्योंकि वह अपना राज गुप्त रखना चाहता था

(iii) क्योंकि वह शांतिप्रिय आदमी था

(iv) क्योंकि उसे पता था कि कोई बचाने नहीं आएगा

(ग) सड़क पर हत्या होने से आप क्या अर्थ निकालते हैं?

(i) गुंडागर्दी

(ii) कानून व्यवस्था का नहीं होना

(iii) आतंकवाद

(iv) उपर्युक्त सभी

(घ) 'आँख गड़ाए' मुहावरे का अर्थ है:

(i) टकटकी लगाकर देखना

(ii) आँख जमीन से चिपकाना

(iii) किसी चीज़ को आँख में गड़ाकर देखना

(iv) खूब देखना

(ङ) उपर्युक्त काव्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक चुनें:

(i) गुंडाराज

(ii) कानून का शासन

(iii) शासन का सच

(iv) हत्यारा

खण्ड - ख

(व्याकरण)

5. **निर्देशानुसार कीजिए:**

(क) आप चाय पिएँगे या कॉफ़ी | (वाक्य भेद लिखिए)

(ख) रमेश आया | सब प्रसन्न हो गए | (वाक्य का संयुक्त वाक्य में रूपांतरण कीजिए)

(ग) उसे दफ़्तर की नौकरी से घृणा थी।

6. **निम्नलिखित वाक्यो में निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए।**

(क) मेरे द्वारा समय की पाबंदी पर निबंध लिखा गया। (कर्तृवाच्य में)

(ख) मेरे मित्र से चला नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में)

(ग) उनके सामने कौन बोल सकेगा? (भाववाच्य में)

(घ) भाई साहब ने मुझे पतंग दी। (कर्मवाच्य में)

7. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए।**

(क) हम बाग में गए, परन्तु वहाँ कोई आम नहीं मिला |

(ख) जल्दी करो वे सब आते होंगे | वाक्य में रेखांकित पद का परिचय दीजिए |

(ग) अहा! उपवन में सुंदर फूल खिले हैं |

(घ) वाह! बहुत मनोरंजक <u>कहानी</u> है |

8. **काव्यांश पढ़कर उसमें निहित रस पहचानकर लिखिए:**

(क) पुनि पुनि रामहिं चितव सिय, सकुचति मनु सकुचैन।
हरत मनोहर मीन छबि प्रेम पिआसे नैन।।

(ख) 'बात मास्टर जी? सच यह है, मुझे हुई यों देरी,
बिस्तर पर गिर पड़ा और लग गई आँख थी मेरी।
सब बच्चे खिलखिला पड़े, हँसते थे पेट फुलाए,
अध्यापक भी हँसे स्वयं, पर ऊपर से झल्लाए।

(ग) रस से क्या अभिप्राय है? इसके कितने भेद है?

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

9. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नो के उत्तर दीजिए-**

नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए | हमें तसलीम में सिर खम कर लेना पड़ा- यह है खानदानी तहज़ीब, नफ़ासत और नज़ाकत !

हम गौर कर रहे थे, खीरा इस्तेमाल करने के इस तरीके को खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने के सूक्ष्म, नफ़ीम या एब्स्ट्रैक्ट ज़रूर कहा जा सकता है परंतु क्या ऐसे तरीके से उदर की तृप्ति भी हो सकती है?

नवाब साहब की ओर से भरे पेट के ऊँचे डकार का शब्द सुनाई दिया और नवाब साहब ने हमारी ओर देखकर कह दिया, 'खीरा लज़ीज़ होता है लेकिन होता है सकील, नामुराद मेदे पर बोझ डाल देता है |'

(क) उपर्युक्त गद्यांश में किस व्यंग्य किया गया है?

(ख) लेखक किस बात पर विचार कर रहा था?

(ग) नवाब ने खीरे के किस दुर्गुण की ओर संकेत किया है?

10. **निम्नलिहित प्रश्नो के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-**

(क) नेताजी की मूर्ति की आँखों पर लगा चश्मा बार-बार क्यों बदल जाता था?

(ख) 'धीरे-धीरे मन तन पर हावी हो जाता'-इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

(ग) नवाब साहब को खीरा काटकर नमक-मिर्च लगाते हुए देखकर लेखक क्या सोच रहा था?

(घ) लेखक को कभी-कभी ऐसा क्यों लगता था कि फ़ादर बुल्के मन से संन्यासी नहीं थे?

11. **निम्नलिखित पद्यांश को पड़कर दिए गए प्रश्नो के उत्तर लिखिए-**

तुम मुझे पाए नहीं पहचान?
देखती ही रहोगे अनिमेष !
थक गए हो?

आँख लूँ मैं फेर?
क्या हुआ यदि हो सके परिचित न पहली बार?
यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज
मैं न सकता देख
मैं न पाता जान
तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान

(क) कवि ने ऐसा क्यों कहा कि 'तुम मुझे पाए नहीं पहचान'?

(ख) शिशु ने कवि को किस प्रकार पहचाना?

(ग) काव्यांश में प्रयुक्त अलंकार लिखिए |

12. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर- संक्षेप में लिखिए:**

(क) कृष्ण के किस कार्य को गोपियाँ अन्याय बता रही हैं और क्यों?

(ख) कवि अपने जीवन के किस प्रसंग को जग-जाहिर नहीं करना चाहता था और क्यों?

(ग) वर्षा के बिना लोगों की अवस्था कैसी हो गई? उनके लिए कवि बादलों से क्या अपेक्षा करता है?

(घ) बालक की दंतुरित मुसकान को देख पाने के लिए कवि इसका श्रेय किसको देता है और क्यों?

13. समाज को सही दिशा दिखाने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक विषय जनहित में होना चाहिए | क्या अप इस उक्ति से सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए |

खण्ड-घ

('लेखन')

14. **दिए गए संकेत बिन्दुओ के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए -**

(क) सफलता की कुंजी: मन की एकाग्रता
मन की एकाग्रता क्या और क्यों
सफलता की कुंजी
सतत अभ्यास

अथवा

(ख) पश्चिम की ओर बढ़ते कदम
पश्चिम की चमक-धमक
आकर्षण के कारण
बचाव

अथवा

(ग) इंटरनैट का प्रभाव

इंटरनैट-क्या है
मानव मन पर प्रभाव
सदुपयोग

15. निकट के थाना प्रभारी को पत्र लिखकर रात्रि में गश्त बढ़ाने का अनुरोध कीजिये।

16. **निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए:**

गतिशील व्यक्ति और संस्था को चाहिए कि वह निरंतर दो तरह की तुलना करते रहे | अपनी ही वर्तमान स्थिति की तुलना अपने पिछले दिनों से और अपनी तुलना अपने ही समान और स्तर के अन्य लोगों और संस्थाओं से| हम कल कैसे थे? क्या हमने कल कि अपेक्षा अपने को ज्यादा शक्तिशाली, प्राणवान, गतिशील, उपयोगी और आकर्षक बनाया है ? क्या हम कुछ मैले और बासी तो नहीं पड़ गए हैं ? खिन हम दूसरों की अपेक्षा पिछड़ तो नहीं रहे हैं ? इस बीच दूसरों ने जो आकर्षण, योग्यता और शक्ति अपने में विकसित कर ली है, क्या हम वैसा नहीं कर सके ? हमें कल के लिए अपने में क्युआ कुछ ऐसा नया और उपयोगी कदम जोड़ देना होगा जिससे हमारी वर्तमान स्थिति में नया प्राणवेग आ जाए ? प्रगति की इस दौड़ में हमें और हमारी संस्था को आँखें खुली, संकल्प, सबल, कठिन परिश्रम और उत्साह-उल्लास बनाए रखना है|

आदर्श प्रश्न- पत्र - 5

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'अ'

कक्षा - दसवीं

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

निर्देश:

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. **(क)** (i) समाज में
   (ख) (ii) सुसंगति से बुरा भी अच्छा हो जाता है
   (ग) (iii) अनुकरणशील
   (घ) (iv) कर्मधारय
   (ङ) (iv) सुसंगति का महत्त्व

2. **(क)** (iv) उपर्युक्त सभी
   (ख) (ii) अतीत के खंडहर में प्राणों का संचार करती है
   (ग) (iv) उपर्युक्त सभी
   (घ) (i) भारतीय नारी
   (ङ) (iv) उपर्युक्त सभी

3. **(क)** (ii) नई उमंगों के आगमन की
   (ख) (iv) सुखों व दुखों का आवागमन
   (ग) (i) सफलता-असफलता को समान भाव से स्वीकारने की
   (घ) (ii) शहीदों की ओर
   (ङ) (iv) उपर्युक्त सभी

4. **(क)** (i) क्योंकि वह जानता था कि उसकी हत्या होगी
   (ख) (iv) क्योंकि उसे पता था कि कोई बचाने नहीं आएगा
   (ग) (ii) कानून व्यवस्था का नहीं होना
   (घ) (i) टकटकी लगाकर देखना
   (ङ) (i) गुंडाराज

खण्ड - ख

(व्याकरण)

5. **(क)** संयुक्त वाक्य से |

(ख) रमेश आया और सब प्रसन्न हो गए |

(ग) सरलवाक्य

6. **(क)** मैंने समय की पाबंदी पर निबंध लिखा।

(ख) मेरा मित्र चल नहीं सकता।

(ग) उनके सामने किसके द्वारा बोला जाएगा।

(घ) भाई साहब द्वारा मुझे पतंग दी जाती है।

7. **(क)** जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक |

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक, 'आते होंगे' क्रिया का कर्ता |

(ग) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक |

(घ) जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकार, 'है' क्रिया का कर्ता |

8. **(क)** संयोग श्रृंगार रस

(ख) हास्य रस।

(ग) विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव संयोग से निः सरीत भाव को रस कहते है। रस के दस भेद है:- (ई) शृंगार, (ई) करुण, (ईई) शांत, (इव) रौद्र, (व्) वीर, (वि) हास्य, (वी) भयानक, (वीई) वीभत्स, (इस) अदभुद, (क्ष) वात्सल्य।

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

9. **(क)** गद्यांश में नवाबों की बनावटी जीवन शैली पर, इनके नाज-नखरे तथा झूठी शान पर व्यंग्य किया गया है|

(ख) लेखक उदर तृप्ति के तरीके पर विचार कर रहा था |

(ग) इसके सेवन से अमाशय पर बोझ पड़ता है क्योंकि यह सुपाच्य नहीं है | नवाब साहब ने खीरे का यह दुर्गुण बताया |

10. **(क)** कैप्टन चश्मेवाला नेताजी की मूर्ति की आँखों पर चश्मे का फ्रेम लगा देता था | परन्तु जब किसी ग्राहक को मूर्ति पर लगे हुए चश्मे के जैसे फ्रेम की आवश्यकता होती थी तो कैप्टन मूर्ति पर लगे फ्रेम को नेताजी से क्षमा माँगते हुए उतारकर ग्राहक को दे देता था और बाद में नेताजी की मूर्ति की आँखों पर नया फ्रेम लगा देता था |

(ख) बालगोबिन भगत के गाने के समय जब ताल-स्वर का आरोह होता, तब सुनने वालों का मन भी ऊपर उठने लग जाता | उस तल्लीनता की अवस्था में शरीर पर मन के आनंदविभोर हो जाने पर लोगों का शरीर भी स्वयं ही नृत्य करने लगा जाता |

(ग) नवाब साहब को खीरा काटकर नमक-मिर्च लगाते हुए देखकर लेखक यह सोच रहा था कि नवाब साहब दुनिया के सामने तो धनवान बनते हैं | परन्तु यह सोचकर कि मैं लोगों को नजरों से बच जाऊँगा, अब अपनी वास्तविकता पर आ गए हैं | इस प्रकार लेखक यह अनुभव कर रहा था कि नवाब साहब धनी होने का केवल दिखावा कर रहे हैं, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है |

(घ) लेखक को कभी-कभी ऐसा लगता थे कि फ़ादर बुल्के मन से संन्यासी नहीं थे | इसका कारण यह था कि फ़ादर यदि किसी से रिश्ता बनाते थे, तो उसे तोड़ते नहीं थे | वे अपनी रिश्तों को अंत तक निभाते थे | लेखक के विचार में संन्यासी के मन में तो वैराग्य कि भावना होनी चाहिए | उसे किसी के मोह में नहीं पड़ना चाहिए, जबकि फ़ादर दिल्ली आने पर उससे जरुर मिलते थे, समय कि कमी अथवा मौसम के विपरीत होने पर भी |

11.**(क)** नन्हा बच्चा अनजान व्यक्ति को सामने पाकर उसे टकटकी लगा कर देखने लगा | बच्चे की आँखों में उत्साह और अजनबीपन का भाव था | इसलिए कवि ने बच्चे के इस अनोखे भाव को देखकर ये शब्द कहे थे |

(ख) शिशु की माँ ने शिशु को कवि से परिचित कराया | तभी वह मुसकराया और कवि से हिल-मिल गया |

(ग) स्वभावोक्ति अलंकार - शिशु की मनमोहक छवि का सहज -स्वाभाविक वर्णन हुआ है |

12.**(क)** गोपियाँ कृष्ण से अनन्य प्रेम करती हैं, वे उनसे एक पल भी दूर नहीं रहना चाहती, परंतु कृष्ण ने स्वयं नहीं आकर उद्धव के द्वारा उन्हें योग का संदेश भेज दिया है | वियोग की पराकाष्ठा में कृष्ण का ऐसा व्यवहार उन्हें अन्याय प्रतीत होता है, क्योंकि उन्हें लगता है कि कृष्ण उनके हृदय की पीड़ा की उपेक्षा करते हुए उनसे मिलने नहीं आ रहे हैं |

(ख) कवि अपने जीवन में किसी के प्रति किए गए प्रेम-भाव को जग जाहिर नहीं करना चाहता था | वह नहीं चाहता था कि जिस प्रेम के सुख को उसने पाया ही नहीं और जिसका केवल सपना-भर देखा उसे दूसरों के सामने प्रकट करे | वह प्रेम तो उसकी स्मृतियों का सहारा था जो उसे जीने की प्ररेणा देता था |

(ग) वर्षा के बिना सारे लोग गर्मी से व्याकुल हो गए हैं | इस व्याकुलता के कारण उनका मन कहीं एक जगह टिक नहीं पा रहा है | अज्ञात दिशा से आए अंतहीन बादलों से कवि यह अपेक्षा करता है कि वे बरस जाएँ | जिससे गर्मी से जल रही धरती शीतल हो जाए और व्याकुल लोगों को राहत मिल सके |

(घ) कवि बालक की दंतुरित मुसकान की सुंदरता को देख पाता है और उसके मोहक आकर्षण व उसके प्रभाव को जान पाता है | कवि इसका श्रेय बालक की माता को देता है | कवि का मानना है कि बालक की इस सुंदर मुसकान से कवि को परिचित कराने का माध्यम तो उसकी माँ ही है | उसी के कारण ऐसा संभव हो सका है |

13.मैं इस उक्ति से शत प्रतिशत हूँ | जनसंचार के सभी साधन समाज तथा लोकतंत्र के सुदृढ़ तंत्र हैं, अतः संचार के सभी साधनों का प्रयोग जनहित में हो यह सुनिश्चित करना होगा | अखबार आम जन तक पहुँचने वाला संचार का सबसे उत्तम साधन है | इस संचार माध्यम से जुड़े सभी लोगों को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके अखबार में छपने वाले विषय जानता को जागरूक करने तथा जनहित के लिए हों न कि उन्हें दिग्भ्रमित करें के लिए | जनता से ही देश है अतः देश के विकास का पथ प्रशस्त करना सबका दायित्व है | समाचार-पत्र यदि सेवा भाव चाहिए देश व देशवासियों की आवाज बुलंद करें तो निश्चित रुप से वह राष्ट्र तथा समाज की कायापलट में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है | अखबार अपने पाठकों के सभी वर्गों के लिए पठनीय, उपादेय तथा माननीय सामग्री प्रदान करेंगे | ऐसी मेरी आशा है | अखबार दूध-का-दूध और पानी-का-पानी करने वाला सच्चा न्यायाधीश होता है |

खण्ड-घ

('लेखन')

14.**(क)** परिश्रम को सफलता की चाबी माना जाता है। परिश्रम के लिए मन की एकाग्रता बहुत आवश्यक है। इसके बिना परिश्रम संभव नहीं है। कुछ लोग एकाग्रता की कमी के कारण ही थोड़े समय बाद हार मान लेते हैं। जिसने मन को एकाग्र करके पुरुषार्थ दिखा दिया, वह जीवन में सफलता प्राप्त कर लेता है। जो परिश्रम का महत्व जानता है और परिश्रम करने से कतराता नहीं है लक्ष्मी उसे वरण करने के लिए सदैव तैयार रहती है। भाग्य के भरोसे रहने वाले विफलता का स्वाद ही चखते हैं। अवसर उनके हाथ में आकर भी निकल जाता है। कठिन परिश्रम ही भाग्य को बनाता है। किया गया परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। वह अपना रंग अवश्य दिखाता है। परिश्रम का महत्व परिश्रम करने वाले से अधिक कोई नहीं जानता है। परिश्रम के सहारे मनुष्य किसी भी प्रकार की कठिनाई को अपने मार्ग से दूर हटा देता है। परिश्रम का नाम आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता है। जो परिश्रमी हैं, वह आत्मनिर्भर हैं। आत्मनिर्भरता उसमें आत्मविश्वास का समावेश करती है। परिश्रम से बढ़ने वाला व्यक्ति चट्टान के समान होता है। उसकी सफलता दूसरों की दया और सहानुभूति पर निर्भर नहीं होती है। संसार में अन्य लोगों द्वारा उसका अनुसरण किया जाता है। ऐसे लोग संसार में अमर हो जाते हैं। मानचित्र में जापान बहुत ही छोटा देश है परन्तु उसका लोहा पूरा विश्व मानता है। आज जापान हर क्षेत्र में अग्रणीय है। ऐसा वहाँ के लोगों के कठोर परिश्रम के कारण ही संभव हो पाया है। भारत जिसने कई वर्षों की गुलामी सही। उसकी अतुल धन-संपदा को लुट लिया गया परन्तु इस देश के नागरिकों ने पुन: स्वयं को विश्व के यूरोपीय देशों की कतार में ला खड़ा किया है। परिश्रम अपनी कहानी स्वयं कहता है। यदि हम कहीं सफल नहीं हो पाते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि हमने पूरी तरह से परिश्रम नहीं किया है। विद्यार्थी जीवन में भी परिश्रम बहुत महत्व रखता है। यदि विद्यार्थी पढ़ने में मन नहीं लगाता है और निरंतर अभ्यास नहीं करता, तो परीक्षा में उसके हाथ असफलता ही लगती है। परिश्रम जितना अधिक किया होगा, सफलता का स्वाद उतना ही रसीला होगा। अत: इसके महत्व को समझते हुए परिश्रम को जीवन में महत्व देना चाहिए।

अथवा

(ख) भारतीय समाज में आज पाश्चात्य संस्कृति की धूम मची हुई है। लोग अपनी संस्कृति को छोड़कर बाहरी संस्कृति के आकर्षण में बंधे हुए हैं। यह आकर्षण इतना मजबूत है कि इसके मोहपाश से आज की पीढ़ी की निकलाना कठिन हो रहा है. पाश्चात्य की संस्कृति का खुलापन, उसकी चमक-दमक हमें प्रभावित कर रहा है। हमारी संस्कृति इतने खुलेपन की विरोधी है। आज की पीढ़ी खुलापन चाहती है। वह किसी का जीवन में हस्तक्षेप पसंद नहीं करती है। मदिरा, नाच-गाना यही उनके जीवन का उद्देश्य रह गया है। परिवार, ज़िम्मेदारियाँ उनके लिए आज महत्वपूर्ण नहीं है। अतः वे अपनी संस्कति से दूर हो रहे हैं। इसका दुष्प्रभाव भारतीय संस्कृति पर पड़ रहा है और वह धीरे-धीरे विलुप्ति की कगार पर है। हमें चाहिए कि अपनी संस्कृति को बचाएँ। बच्चों को अपनी संस्कृति के महत्व को बताएँ, उनमें बचपन से ही ऐसे मूल्य डालने आरंभ करें, जो कहीं खोते जा रहे हैं। बाहरी संस्कृति के भाव से बचाना है, तो उन्हें अपनी संस्कृति से परिचय करना आवश्यक है। यह हमारी ही संस्कृति है जिसने नदियाँ को माँ का दर्जा दिया है। यहाँ हर धर्म को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। जहाँ क्षमा माँगने वाले को गले से लगाया जाता है तथा हारे हुए अपने शत्रु को भी मान-सम्मान के साथ छोड़ दिया जाता है। हमारी संस्कृति ने प्रेम, अहिंसा, सत्य इत्यादि भावों को महत्व दिया है।

अथवा

(ग) इंटरनेट संचार का एक सुगम माध्यम है। आज के समय में इंटरनेट हर व्यक्ति की आवश्यकता बनता जा रहा है। इसका जाल पूरे विश्व में फैला हुआ है। यह टेलिफोन की लाइनों, उपग्रहों और प्रकाशीय केबिल के द्वारा कंप्यूटर से जुड़ा होता है। कंप्यूटर के आविष्कार के कारण ही इंटरनेट अस्तित्व में आया। इंटरनेट के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने में समस्त जानकारी एक स्थान से दूसरे स्थान में कंप्यूटर से सरलता व शीघ्रता से भेजी और पढ़ी जा सकती है।

इसका जन्मदाता अमेरिका माना जाता है। सर्वप्रथम इसका प्रयोग अमेरिका के रक्षा मंत्रालय में हुआ था। सर्वप्रथम प्रकाशीय केबल के माध्यम से कंप्यूटरों को आपस में जोड़ा गया था। इसके पश्चात चार विश्वविद्यालयों के कंप्यूटरों को आपस में नेटवर्किंग करके इंटरनेटअप्रानेट का आरंभ किया गया था। फिर तो इसका इस्तेमाल सरकारी, शिक्षा, विकास और शोध करने वाली संस्थाओं के लिए भी किया गया। धीरे-धीरे तो इंटरनेट में ई-मेल (इलेक्ट्रॉनिक मेल) का आरंभ हो गया। यह संचार का सबसे सरल, तेज़ और सस्ता माध्यम है।

हर व्यक्ति अपने कंप्यूटर में टेलिफोन लाइन या फिर मोंडम के माध्यम से इंटरनेट की सुविधा का लाभ उठा सकता है। इसके कारण मानव मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। आज के जीवन में यह बहुत ही सफल माध्यम है। मानव मन तो इसके बिना अधूरा है। यदि यह न तो हमारे मन में खलबली मच जाए। आज इसके सदुपयोगों की एक लंबी सूची विद्यमान है। इसमें किसी भी तरह की जानकारी और सूचना प्राप्त की जा सकती है। ज्ञान का यह अतुलनीय भंडार है। इसकी

विशेषताओं के कारण ही इसका प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। किसी भी तरह के कार्यालय की यह आवश्यकता बन गया है। इसका प्रयोग एक सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया जाता है, जो वी.बी., जावा, एस.जी.एम.एल. तथा एच.टी.एम.एल में विकसित किया जाता है।
इंटरनेट में संदेश ई-मेल के माध्यम से भेजा जाता है। ई-मेल धारक इसके माध्यम से विभिन्न तरह की मेल अपने संबंधियों, मित्रों या अन्य स्थानों पर भेजता है। इसमें विभिन्न लिखित पत्र, चित्र इत्यादि होते हैं। इंटरनेट का इस्तेमाल सूचनाएँ एकत्र करने के लिए भी किया जाता है। इन सूचनाओं को हम अपनी वेब साइट में सर्वर के माध्यम से एकत्र करके रखते हैं। हमारी वेब साईट हमारा भंडारण क्षेत्र है। आज हम इंटरनेट के माध्यम से हज़ारों वेब साईट देख सकते हैं। चिकित्सा, व्यवसाय, शिक्षा, मनोरंजन, साहित्य, राजनीति, समाचार-पत्र आदि विभिन्न क्षेत्रों में सूचनाएँ एकत्र की जाती हैं, जो वेब साईट के माध्यम से कंप्यूटर में हमें दिखाई देती हैं।

15. साकेत, दिल्ली

दिनांक...........

सेवा में,

थानाध्यक्ष,

साकेत पुलिस स्टेशन,

नई दिल्ली।

विषय: क्षेत्र में गश्त बढ़ाने हेतु निवेदन पत्र।

महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से साकेत के आस-पास के इलाके में हो रही चोरियों और लूटपाट की घटनाओं की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूँ। हमारे इलाके में आए दिन घरों के दरवाजे टूट जाते हैं तो कभी दुकान के ताले टूट जाते हैं। दिन दहाड़े चोर घरों में घुस जाते हैं और जमकर लूटपाट करते हैं।

बाज़ार में चलती हुई स्त्रियों के गले से चैन खींच ली जाती है। गली में खड़ी गाड़ियों के स्टीरियों और स्कूटर और बाईक आदि सभी कुछ चोरी हो जाता है। यदि कोई इन चोरों का विरोध करता है तो उस व्यक्ति के साथ मार-पिटाई की जाती है। हमारे क्षेत्र में यह रोज़ की बात हो गई है।

आपसे निवेदन है कि हमारे क्षेत्र में बढ़ते हुए अपराधों की रोकथाम के लिए कदम उठाए जाएँ। पुलिस जो दिन में केवल एक बार गश्त लगाती है। उसके द्वारा गश्त की संख्या कम-से-कम दिन में पाँच बार बढ़ा दिए जाएँ। तीन-चार सिपाहियों की गश्त होने से शायद यह परेशानी कम हो जाए। दिन और रात में पुलिस की गाड़ी भी चक्कर लगाए। हमें आशा है कि आप हमारी परेशानी को समझेंगे और समुचित सुरक्षा प्रबंध करेंगे। अत्यन्त आभार के साथ धन्यवाद।

भवदीय,

सोहन कुमार

मोहल्ला समिति

16. प्रगति की ओर गतिशील व्यक्ति और संस्था को चाहिए कि वे निरंतर अपनी वर्तमान स्थिति की तुलना अपनी विगत स्थिति और अपने ही समान अन्य उन्नत संस्थाओं के साथ करते रहें तथा दोषों का निराकरण करते हुए संकल्प और परिश्रम के साथ अपने को बेहतर बनाने में जुट जाएँ |